प्राक्कथन

आधुनिक हिन्दी कविता के विकास को ध्यान में रखते हुए यह अवश्य कहा जा सकता है कि उसने राष्ट्रीय जागरण के राष्ट्रीय कार्य को भलीभांति सम्पन्न किया है। राष्ट्रीय काव्यधारा ने न केवल अपेक्षित राष्ट्रीय जागरण किया, अपितु उसे गति एवं शक्ति भी प्रदान की। जागरण के इस कार्य में एक ओर सुधारवादी नेताओं ने वैचारिक एवं भावात्मक क्रान्ति का वातावरण निर्मित करने का यत्न किया तो दूसरी ओर तत्युगीन राष्ट्रीय कवियों ने उसी भावधारा से प्रभावित होकर स्पंदनशील भावानुभूतियों को हिन्दी काव्य के द्वारा सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान की। इनके सामूहिक प्रयास के परिणाम स्वरूप भारतीय जन-समाज में ऐसी राष्ट्रीय चेतना का सन्निवेश हुआ कि उसके कारण हमारे देश को ब्रिटिश शासन से मुक्ति प्राप्त हुई।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरकालीन राष्ट्रीय जागरण परक सांस्कृतिक व सामाजिक आंदोलन के परिणामस्वरूप आधुनिक हिन्दी साहित्य को नई चेतना प्राप्त हुई। अनेक कवियों ने युगानुरूप काव्य-सर्जन करते हुए नवीन युग का प्रारंभ किया। भारतेन्दु इनमें अग्रणी थे। इस तरह भारतेन्दु युग से ही राष्ट्रीय काव्यधारा प्रवाहित होने लगी। तदनन्तर द्विवेदीयुग से परिपुष्ट होती हुई छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता आदि के साथ-साथ अपनी समानांतर अस्खलित धारा को प्रवाहित करती हुई वह अद्यावधि चल रही है। इस दीर्घ कालावधि को सुविधा के लिए स्वातंत्र्य पूर्व एवं स्वातंत्र्योत्तर युग कहना समीचीन लग रहा है। वस्तुत: स्वातंत्र्य-पूर्व तक की अवधि के अंतर्गत यह धारा अपने चरमोत्कर्ष को प्राप्त हुई। छायावाद एवं प्रगतिवाद के सशक्त काव्य-प्रवाहों के सामने भी यह धारा समस्त युगीन आवश्यकताओं को अपने में समेटती हुई अपना पृथक अस्तित्व एवं महत्व प्रतिपादित करती रही। प्रस्तुत काव्यधारा के उज्ज्वल रत्न मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, दिनकर, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', सुभद्राकुमारी चौहान प्रभृति अनेक ऐसे राष्ट्रीय कवि हुए हैं जिनकी लेखनी ने राष्ट्रीय जागरण के सन्दर्भ में अनेक रचनाएँ प्रस्तुत करते हुए राष्ट्रीय

काव्यधारा को परिपुष्ट किया । पंडित सोहनलाल द्विवेदी भी इसी युग के प्रसिद्ध राष्ट्रीय कवि हैं । उक्त अन्य राष्ट्रीय कवियों के काव्य का अनुशीलन करते हुए विद्वान लेखकों ने एकाधिक शोध-कार्य प्रस्तुत किये हैं । इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय काव्य-धारा पर भी अलग से शोध-कार्य प्रस्तुत किया जा चुका है । किन्तु पं० सोहनलाल द्विवेदी के काव्य पर इस प्रकार का शोध-कार्य अद्यावधि नहीं हो पाया है । हाँ, उनके काव्य के कतिपय पक्षों पर विभिन्न लेखकों ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कुछ लेख अवश्य लिखे हैं जो 'द्विवेदी अभिनंदन ग्रंथ' में संकलित किये गये हैं । राष्ट्रीय जागरण एवं निर्माण को काव्य का विषय बनाते हुए एकान्त साधना करनेवाले पंडित सोहनलाल द्विवेदी के काव्यों का सर्वांगपूर्ण अध्ययन-अनुशीलन जब तक न किया जाय तब तक राष्ट्रीय काव्य धारा अपने आप में अपूर्ण समझी जाएगी । तदर्थ लेखक ने राष्ट्रीय जागरण की पृष्ठभूमि में द्विवेदी जी के काव्य का अनुशीलन करने का विनम्र प्रयास प्रस्तुत शोध-प्रबंध में किया है । समूचे शोध-प्रबंध को नव अध्यायों में विभक्त किया गया है । अन्त में उपसंहार भी प्रस्तुत किया गया है ।

प्रथम अध्याय के अंतर्गत राष्ट्रीयता के विधायक तत्व और राष्ट्रीय जागरण की विविध भूमियों का अनुशीलन किया गया है । अध्याय के पूर्वार्द्ध में राष्ट्रीयता के सैद्धांतिक पक्ष पर विचार करते हुए उसके विधायक तत्वों पर दृष्टिक्षेप किया गया है । इस संदर्भ में भारत की राष्ट्रीयता विषयक अवधारणाओं का आकलन करते हुए भारत को परंपरा-प्राप्त राष्ट्र के रूप में स्वीकार किया गया है । अध्याय के उत्तरार्द्ध में आधुनिक राष्ट्रीय चेतना की विविध भूमियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करते हुए सन् १८५७ से लेकर सन् १९२० ई० तक के संक्षिप्त ऐतिहासिक घटनाक्रम को प्रस्तुत किया गया है । इसके अतिरिक्त सांस्कृतिक पुनर्जागरण के सूत्रधार स्वामी दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद प्रभृति समाज-सुधारकों के सत्प्रयासों के परिणाम-स्वरूप जन-समाज में व्याप्त जागृति की चेतना पर सविशेष अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

वस्तुत: प्रथम अध्याय में आलोच्य कवि के काव्य-युग की पूर्वकालीन राष्ट्रीय जागरण की विविध भूमियों को एक पृष्ठभूमि के रूप में रखने का विनम्र प्रयास किया गया है जिससे राष्ट्रीय जागरण का एक समग्र चित्र उपस्थित हो सके ।

द्वितीय अध्याय के अंतर्गत आधुनिक हिन्दी-काव्य में राष्ट्रीय जागरण की विकासात्मक पृष्ठभूमि का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है । सर्वप्रथम भारतेन्दुयुगीन राष्ट्रीय काव्य तथा द्विवेदीयुगीन राष्ट्रीय-काव्य में जागरण की विविध स्थितियों का संक्षेप में आकलन करने के पश्चात् छायावाद एवं छायावादोत्तर युगीन राष्ट्रीय काव्य पर अध्ययन प्रस्तुत किया गया है । पंडित सोहनलाल द्विवेदी भी इसी युग के कवि हैं । राष्ट्रीय जागरण से सम्बंधित प्राय: सभी राष्ट्रीय कवियों के काव्य का सविस्तर अध्ययन किया गया है जिसमें यह निर्दिष्ट करने का प्रयास हुआ है कि गांधी जी की चिन्तन-प्रणाली का उक्त कवियों पर कैसा प्रभाव परिलक्षित होता है । गांधीवादी नीतियों पर विश्वास रखने वाले कवियों की काव्य-साधना पर तो उनका प्रत्यक्ष प्रभाव दृष्टिगत होता है । साथ ही उनकी चिन्तन -प्रणाली पर विश्वास न करनेवाले कवियों के भी कतिपय ऐसे काव्यखंडों को प्रस्तुत किया गया है जिन पर न्यूनाधिक मात्रा में ही सही उनका प्रभाव परिलक्षित होता है । इस तरह प्रस्तुत अध्याय में भारतेन्दु युग से लेकर स्वतंत्रता-प्राप्ति के कालखण्ड के अंतर्गत आनेवाले प्राय: सभी राष्ट्रवादी एवं राष्ट्रवादेतर कवियों की रचनाओं का अध्ययन प्रस्तुत करते हुए राष्ट्रीय जागरण की विकासात्मक पृष्ठभूमि का एक चित्र अंकित करने का विनम्र प्रयास किया गया है ।

कवि जिस परिवेश में जीवन व्यतीत करता है उसकी राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक सम-विषम गतिविधियों का उसके व्यक्तित्व-गठन में महत्वपूर्ण योगदान होता है । इस दृष्टि से गांधीवादी कवि द्विवेदी जी के व्यक्तित्व गठन पर

पड़नेवाले विभिन्न संस्कारों का विशद वर्णन तृतीय अध्याय में किया गया है। साथ ही यह भी निर्दिष्ट किया गया है कि गांधीवाद के प्रभाव के परिणाम स्वरूप उनमें निर्भकिता, निस्पृहिता, उदारता, आत्मश्लाघा का अभाव जैसी कतिपय विशेषतारँ विकसित हुई हैं जो उनके एकाधिक जीवन-प्रसंगों में दृष्टिगोचर होती हैं। लेखक ने कवि से प्रत्यक्ष संपर्क स्थापित करके ऐसे प्रसंगों एवं तथ्यों को संकलित किया है।

चतुर्थ अध्याय में द्विवेदी जी की काव्य-कृतियोंका अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। यह एक संयोग की बात है कि गांधी जी का भारतीय राजनीतिक धरातल पर अपनी नूतन चिन्तन-प्रणाली से कार्यारंभ करना और उससे प्रभावित होकर द्विवेदी जी की काव्य-यात्रा का प्रारंभ होना समकालीन है। उनकी समस्त काव्य-रचनाओं का काल-क्रमानुसार परिचयात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। उनकी बाल- साहित्य सम्बंधी रचनाओं एवं संपादित कृतियों का भी संक्षिप्त परिचय अंत में दिया गया है। उनकी रचनारँ मानव जीवन के प्राय: समस्त पक्षों को उजागर करते हुए लिखी गई हैं। राष्ट्रीय जागरण व निर्माण के कार्य को काव्य के माध्यम से उन्होंने राजनीतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक तथा आर्थिक विभिन्न स्तरों पर किया है। साथ ही बाल-मनोविज्ञान पर आधारित कतिपय रचनारं भी लिखी हैं। अत: इन सभी रचनाओं के विशेष पक्षों पर पृथक अध्ययन परवर्ती अध्यायों में किया गया है।

पंचम अध्याय के अंतर्गत राष्ट्रीय आंदोलन की भूमिका में द्विवेदी जी के राष्ट्रीय काव्य पर विचार किया गया है। अध्याय के पूर्वार्द्ध में सन् १६२० ई० से लेकर स्वतंत्रता-प्राप्ति तक के विशेषकर गांधी जी के नेतृत्व में संचालित भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का एक सर्वेक्षण दिया गया है। इसके समानांतर आतंकवादी आंदोलन भी चलता रहा है। तदर्थ उसका भी विहंगावलोकन किया गया है। अध्याय के उत्तरार्द्ध में द्विवेदी जी की राष्ट्रीय रचनाओं का उक्त आन्दोलन के संदर्भ

अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। स्वाधीनता प्राप्ति के निमित्त राष्ट्रीय जागरण का जो प्रमुख कार्य राष्ट्र के सम्मुख आ पड़ा था उसे आपत्कालीन धर्म समझकर द्विवेदी जी ने जागरण के विविध प्रेरणा स्रोतों का अधिकाधिक उपयोग किया है। साथ ही बापू के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के युगीन प्रभाव को भी उन्होंने अनेक काव्यों में व्यक्त करते हुए करोड़ों लोगों के उनके प्रति चुंबकीय आकर्षण का अनुभव कराया है। जागरण के उपरांत स्वतंत्रता-प्राप्ति के लक्ष्य की पूर्ति के लिए राष्ट्र के चरणों में सर्वस्व समर्पित कर देने का भी कवि युग-संदेश देता है। इतना ही नहीं राष्ट्र-निर्माण के मंगल कार्य के लिए भी कवि सदैव प्रयत्नशील रहा है। तदर्थ स्वातंत्र्योत्तर काल में भी नूतन परिवर्तित युगीन सन्दर्भों के अनुसार कवि राष्ट्र-निर्माण के कार्य में संलग्न रहता है। किन्तु गांधी निर्दिष्ट नीति-रीतियों के आधार पर राष्ट्र की आशा-आकांक्षाओं की पूर्ति न होने पर तथा समकालीन नेता एवं शासकों से इसकी कोई संभावना नहीं दीख पड़ती तब उनका निर्भीक आक्रोश भी देखते बनता है। इस तरह राष्ट्रीय-जागरण एवं नव-निर्माण के सन्दर्भ में रचित द्विवेदी जी की राष्ट्रीय रचनाओं में सजगता एवं उत्कट देश-प्रेम से परिपूर्ण भाव सदैव परिलक्षित होते हैं।

षष्ठ अध्याय में द्विवेदी जी के काव्य में राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना पर विचार किया गया है। प्रथम अध्याय में सांस्कृतिक पुनर्जागरण-आंदोलन पर विचार करते हुए यह निर्दिष्ट किया जा चुका है कि प्रायः सभी समाज-सुधारकों ने भारतीय संस्कृति के तथ्यों की युगानुरूप व्याख्या करते हुए जन-समाज में जागृति लाने का प्रयास किया था। इसके साथ ही राष्ट्रीय धारा के सभी कवियों ने संस्कृति की महत्ता को काव्य में स्थापित करते हुए जागृति लाने का यत्न किया। इसके अतिरिक्त अन्य कवियों ने भारतीय संस्कृति का गरिमामय चित्रण अंकित किया है। अर्थात् राष्ट्रीय जागरण के इस युग में संस्कृति को आवश्यक धर्म माना गया। संस्कृति मानव-

जीवन का आन्तरिक सौन्दर्य है । मानव की शारीरिक, मानसिक,व अध्यात्मिक शक्तियों का समन्वित विकास करना ही संस्कृति का प्रमुख उद्देश्य रहता है ।भारतीय संस्कृति के उदात्त तत्वों की प्रतिष्ठा एवं सुरक्षा का कार्य अद्यावधि धर्म और साहित्य करता आया है । अत: संस्कृति और साहित्य के बीच घनिष्ठ सम्बंध समझा गया है । द्विवेदी जी प्रारंभ से ही भारतीय संस्कृति के उपासक रहे हैं । वे त्याग, अपरिग्रह, करुणा, प्रेम आदि में अधिक विश्वास करते हैं अर्थात् मानव को सुसंस्कृत एवं सभ्य बनाने में अधिक रुचि रखते हैं । भारतीय संस्कृति के मान्य जीवन मूल्यों की सुरक्षा के और मानव जीवन को वैयक्तिक एवं सामाजिक उदात्त जीवन मूल्यों से विभूषित करने के महद् उद्देश्य से द्विवेदी जी `वासवदत्ता` ,`कुणाल`,`विषपान`, जैसी सांस्कृतिक रचनाओं का प्रणायन करते हैं । उनकी दृढ़ मान्यता है कि मनुष्य को अपनी कतिपय पशु सुलभ वृत्तियों से ऊपर उठना चाहिए । वे चरित्र को प्रधानता देते हुए मानव जीवन को उदात्त रूप में देखना चाहते हैं । एतदर्थ उसके सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक जीवन-विकास के साथ-साथ उसके सांस्कृतिक विकार के लिए भी चिंतित हैं । उन्होंने मानव जीवन के सभी पक्षों में संस्कृति को प्रधानता दी है अर्थात् मानव जीवन में समानता लाने के लिए सांस्कृतिक मूल्यों को आचरण में उतारने का आग्रह रखा है । अपनी सांस्कृतिक रचनाओं के द्वारा इस उद्देश्य की पूर्ति का उन्होंने प्रयास किया है ।`वासवदत्ता` के सभी घटना-प्रसंगों में कवि ने संस्कृति के विभिन्न तत्वों का उद्घाटन करते हुए उनका उदात्त जीवन के लिए महत्व प्रतिपादित किया है । द्विवेदी जी ने परंपराप्राप्त उदात्त जीवन मूल्यों की पुन: प्रतिष्ठा के उपरान्त सम-सामयिक राजनीतिक, सामाजिक व आर्थिक विकसमान नूतन जीवन मूल्यों को भी गति देने का यत्न किया ।

सप्तम् अध्याय में `काव्य में प्रस्तुत सामाजिक और आर्थिक पक्ष` पर विचार किया गया है । वैसे तो समाज-सुधार का कार्य सांस्कृतिक पुनरुत्थान वादी चिंतकों ने तथा ऐसी ही अन्य संस्थाओं ने प्रारंभ कर ही दिया था किन्तु इसे एक राष्ट्रीय स्तर पर अपनी चिंतन-प्रणाली के आधार पर व्यवस्थित रूप प्रदान करने

का कार्य गांधी जी ने किया । सामाजिक एवं आर्थिक उत्थान के बिना सच्चे अर्थों में स्वराज्य प्राप्त नहीं हो सकता, गांधी जी के इस विचार का उन्हीं की कार्य-पद्धति का अनुसरण करते हुए द्विवेदी जी ने राष्ट्रीय जन-जागरण के साथ-साथ सामाजिक एवं आर्थिक उत्थान का प्रयत्न अपने काव्यों के माध्यम से किया । धर्म व जाति भेद, अस्पृश्यता, मद्यपान, ईर्ष्या, क्रोध आदि सामाजिक दोषों को दूर कर उनके स्थान पर करुणा, प्रेम, त्याग, अपरिग्रह जैसे सामाजिक सद्गुणों की वृद्धि कराके उन्होंने मानव-समता एवं ममता के भाव भरने का प्रयास किया । गांधी निर्दिष्ट नीति-रीति एवं कार्यक्रमों का समर्थन करते हुए कवि ने समाजगत कुरिवाजों एवं अंधविश्वासों के उन्मूलन के लिए यत्न किया । साथ ही आर्थिक शोषण के भीमकाय राक्षस को जनजीवन में से नष्टप्राय करने के उद्देश्य से एक ओर शोषित जनता को रोटी के लिए परिश्रम का महत्व समझाया और दूसरी ओर जमींदारों एवं पूंजी-पतियों को 'ट्रस्टीशिप' का गांधी निर्दिष्ट सिद्धान्त समझाते हुए अपरिग्रह एवं सादगी को अपनाने के लिए उपदिष्ट किया ।

भारतीय ग्रामों के की आर्थिक उन्नति के लिए उन्होंने चरखा, खादी तथा अन्य ग्रामोद्योगों को गांधीवादी नीति पर चलाने का आग्रह रखा है । उनका खादी-गीत इसी तथ्य का उद्घाटन करता है। द्विवेदी जी को दृढ़ विश्वास है कि उत्कट देश प्रेम से परिपूर्ण तथा चरित्र प्रधान सत्याग्रही नवयुवकों के नि:स्वार्थ सहयोग से ही मानव-जीवन के सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में इप्सित उत्थान किया जा सकता है ।

अष्टम अध्याय के अंतर्गत 'राष्ट्रीय चेतना के विशेष सन्दर्भ में द्विवेदी जी का बाल-साहित्य' पर विचार किया गया है। मानव- समाज की विकसनशील यात्रा में बाल-मानस की चेतना का विकास एक महत्वपूर्ण कड़ी है । बालक किसीभी राष्ट्र की भावी निधि है । बाल-मानस के विकास की आवश्यकता एवं महत्वा को ध्यान में रखते हुए द्विवेदी जी ने बाल-मनोविज्ञान पर आधारित अनेक रचनाएँ की हैं जिनका

समुचित अध्ययन प्रस्तुत अध्याय का विषय रहा है । ऐसा करते हुए कवि ने बालक में कतिपय आवश्यक गुणों की अपेक्षा रखी है क्योंकि उनकी दृढ़ मान्यता रही है कि चरित्र प्रधान बालक ही भावी राष्ट्र का सूत्रधार हो सकता है । उन्होंने बाल-रुचि को ध्यान में रखते हुए बाल-जिज्ञासा को भी परिपुष्ट करनेवाले बाल-साहित्य का प्रणयन किया है । उनका बाल-साहित्य विविध प्रकार का है । वह चरित्र-प्रधान, कर्तव्य -प्रधान, ज्ञान-प्रधान, प्रकृति-प्रधान तथा देशप्रेम-प्रधान है । समूचे बाल-साहित्य का अध्ययन करने पर यह प्रतीत होता है कि द्विवेदी जी बाल-मनोविज्ञान के अच्छे ज्ञाता हैं और बालक के साथ बालक हो जाने की उनमें क्षमता है । बालक की कभी संतुष्ट न होनेवाली जिज्ञासा-वृत्ति के अनुरूप ज्ञान देते हुए यह सदैव ध्यान रखना कि बालक-चरित्र-प्रधान होना चाहिए यह एक सिद्धहस्त कलाकार का काम है । द्विवेदी जी इस दिशा में अग्रणी हैं । उनका यह साहित्य कभी अरुचिकर व बोझिल नहीं हुआ है । सरलतम शब्दावली में तथा सीमित शब्द-शक्ति का प्रयोग करके बाल-सुबोध कविताएं लिखना अपेक्षाकृत कठिन है । वे बाल-साहित्य के अद्वितीय कलाकार हैं और बाल-साहित्य के सृजकों में उनका अनुपम स्थान है । कुल मिलाकर लेखक ने इन्हीं तथ्यों पर अध्ययन प्रस्तुत किया है ।

नवम् अध्याय के अंतर्गत कवि के काव्यगत सौष्ठव पर विचार किया गया है । प्रारंभ में कवि की कलागत निजी दृष्टि को प्रस्तुत करते हुए उनके जनवादी दृष्टिकोण को स्पष्ट किया गया है । कवि की भाषा, शब्दचयन, वर्ण-संघटन, शब्द-शक्ति, गुण, रीति तथा काव्य-शैलियों पर विचार किया गया है । काव्य में अलंकार, बिंब, प्रतीक तथा छंद-योजना पर भी सविस्तार अध्ययन प्रस्तुत करते हुए कवि के काव्य-शिल्प पर विचार किया गया है । जनवादी कवि भावानुभूति की अभिव्यक्ति में सरल भाषा का प्रयोग करके संप्रेषणीयता को ही महत्व प्रदान करते हैं । कलागत पच्चीकारी में कवि की रुचि नहीं है ।युगीन संदर्भों में राष्ट्रीय आशा-आकांक्षाओं की पूर्ति के निमित्त तथा लोकमंगलयुक्त राष्ट्र- निर्माण के लिए साधारण

पाठक तक निजी भावानुभूति को सहज-सरल अभिव्यक्त कर देना कवि के काव्य-सर्जन का दृष्टिकोण रहा है। उपर्युक्त पक्षों के संदर्भ में कवि के काव्य का अध्ययन - अनुशीलन करने पर यह कहा जा सकता है कि कवि का काव्यगत सौंदर्य अनूठा है।

उपसंहार :

अन्त में 'राष्ट्रीय काव्य-धारा के विशेष परिप्रेक्ष्य में द्विवेदी जी के काव्य का मूल्यांकन करने का प्रयास किया गया है। उनके काव्य का उपर्युक्त अध्यायों में अध्ययन-अनुशीलन करने के उपरान्त लेखक इस निष्कर्ष पर पहुंचा है कि द्विवेदी जी राष्ट्रीय काव्य-धारा के अमूल्य रत्न हैं। राष्ट्रीय जागरण के सजग प्रहरी हैं। राष्ट्रीय जागरण के प्रयास में अतीत भारत का गौरव गान, मां-भारती की पराधीन-कालीन पीड़ाजन्य स्थितियों का चित्रांकन, दलित, पीड़ित जन-समाज का सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा राजनीतिक उत्थान व समाज नव-निर्माण का कार्य सामान्यत: युगधर्म समझा गया है। राष्ट्रीय काव्य-धारा के कवियों ने उक्त पक्षों एवं सन्दर्भों में से कभी किसी ने एक पक्ष को उजागर किया तो कभी दूसरा। मैथिलीशरण गुप्त प्राय: अतीत भारत के गौरव-गान में अधिक व्यस्त रहे। प्रसाद, निराला, दिनकर, माखनलाल आदि कवियों ने भी प्राय: इसी पक्ष पर बल दिया और मां-भारती की करुण स्थितियों का कभी चित्रांकन किया। किन्तु पंडित सोहनलाल द्विवेदी के काव्य में उक्त पक्षों का तो सर्वांगपूर्ण चित्र मिलता ही है, राष्ट्र-निर्माण के संदर्भ में जनता के सच्चे अर्थों में सामाजिक व आर्थिक उत्थान में भी पूर्ण अभिरुचि के साथ कवि ने सुष्ठु प्रयास किया है। राष्ट्रीय जागरण व निर्माण का सम्पूर्ण चित्र यदि किसी कवि के काव्यों में एक साथ प्राप्त करना हो तो वह केवल द्विवेदी जी के काव्यों में ही मिल पायेगा। उनका काव्य अपने युग की समस्त परि-स्थितियों का दस्तावेज है। गांधी जी के चिन्तन-दर्शन एवं अहिंसात्मक समाज नव-रचना के प्राय: सभी विचार उनके काव्य में मिल जाते हैं। अतएव, उन्हें गांधीवाद के चितेरे या सर्वश्रेष्ठ शिल्पी कहना समीचीन होगा। बालोपयोगी साहित्य लिखने में भी वे सिद्धहस्त कवि हैं। केवल बाल-मनोरंजन करना ही उनका उद्देश्य न रहने के

कारण वे अन्य बाल-साहित्य के कवियों की अपेक्षा एक विशिष्ट स्थान रखते हैं तथा देशप्रेम और चरित्र-प्रधान काव्य लिखने के कारण बाल-साहित्य लिखनेवाले कवियों में उनका अनुपम स्थान है । अन्त में यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण न होगा कि वे राष्ट्रीय काव्य-धारा के एक विशिष्ट महत्व रखने वाले सच्चे अर्थों में राष्ट्रकवि हैं ।

आभार प्रदर्शन :

सर्वप्रथम लेखक पंडित सोहनलाल द्विवेदी जी का अंत:करणपूर्वक आभार प्रदर्शित करते हैं क्योंकि उन्होंने बड़ी उदारता के साथ प्रत्यक्ष संपर्क के समय लेखक के साथ मानवतापूर्ण व्यवहार करते हुए तथा आत्मीयता प्रदर्शित करते हुए आवश्यक तथ्यों का उद्घाटन करके उनके काव्यों पर शोध-प्रबंध लिखने की अनुमति प्रदान की । डा० मदनगोपाल गुप्त जो मेरे विद्याध्ययन काल से ही गुरु रहे हैं तथा आज भी विभागीय अध्यक्ष रहे हैं, उन्होंने अत्यंत सहृदयता से विषय पर विद्वतापूर्ण विचारों को प्रस्तुत करते हुए लेखक का निर्देशन किया है । यदि उनका उचित मार्गदर्शन न मिला होता तो लेखक को विश्वास है प्रस्तुत शोध-प्रबंध का कार्य सुचारु-रूप से न हो पाया होता। अत: मैं लेखक उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने पर भी आजीवन उऋण न हो सकेगा । इसके अतिरिक्त इस शोध-कार्य में संकल्पयुक्त आद्यंत प्रेरणा प्रदान करनेवाली श्रीमती इन्दु इन्दु बहन आर० तलाटी के प्रति भी गहरी संवेदना का लेखक अनुभव करता है ।

अन्त में महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय के उन अधिकारियों का लेखक अत्यन्त कृतज्ञता के साथ आभार-प्रदर्शित करते हैं, जिन्होंने सवैतनिक अवकाश देकर लेखक को शोध-प्रबंध लिखने का अपूर्व उत्साह प्रदान किया। विशेषकर विश्वविद्यालय के कुलपति, सिन्डीकेट के सदस्यों एवं रजिस्ट्रार महोदयों का आभार प्रदर्शित करना लेखक अपना पुनीत कर्तव्य मानता है । विश्वविद्यालय के पुस्तकालय एवं उसके कर्मचारियों तथा कला-संकाय के भी कर्मचारियों, विशेषकर मी० अरोठे के प्रति लेखक आभार प्रदर्शित करता है । साथ ही श्री आर० एस० दुबे ने प्रस्तुत शोध-प्रबंध को बड़ी लगन के साथ अच्छा टाइप करके उचित समय पर लेखक को दिया, तदर्थ उनका भी लेखक कृतज्ञ है ।

--